मुकेश मालवीय
mukeshmalviya15@gmail.com

शिक्षक प्रशिक्षण जो थोडे अलग से थे

सार

यह लेख एक शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम के अनुभवों पर आधारित है और रेखांकित करता है कि सुव्यवस्थित, संवेदनशील प्रशिक्षण शिक्षक को विचारशील बना सकते हैं। इसके लिए प्रशिक्षकों की कार्यशाला से पूर्व व उसके दौरान तैयारी चाहिए व प्रशिक्षुओं के प्रति आदर का व्यवहार।

लगभग तीस वर्षीय लम्बी मेरी शिक्षकीय यात्रा में कितने ही शिक्षक प्रशिक्षणों में मैंने भागीदारी की है पर इनमें कुछ काबिले जिक्र याद नहीं पड़ता। वहीं इस यात्रा के शुरुआती वर्षों में बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को समझने तथा उसे क्रियाशील करने के एक ऐसे कार्यक्रम से मैं जुड सका था जो आज भी मुझे याद है और वह मुझे विचारशील एवं प्रयोगधर्मी शिक्षक के रूप में काम करने में मदद करता है।

मध्यप्रदेश में एक स्वयंसेवी संस्था एकलव्य है। इस संस्था ने आज से दो दशक पूर्व हरदा और बैतूल के कुछ सरकारी प्राथमिक शालाओं में एक कार्यक्रम चलाया जिसका नाम था प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (प्राशिका)। इस कार्यक्रम मे इन शालाओं के शिक्षकों की तैयारी, बच्चों के लिए कक्षा-शिक्षक प्रक्रिया एवं शैक्षिक सामग्री में बुनियादी हस्तक्षेप किया गया और यह हस्तक्षेप शिक्षकों के साथ मिलकर किए गए। यहां मैं इस कार्यक्रम के दौरान होने वाले शिक्षक प्रशिक्षण की कुछ बातें साझा करना चाहता हूं। इन प्रशिक्षणों की विवेचना करना मेरे लिए मुश्किल है पर पीछे लौटकर देखने से जो मुझे समझ में और याद में आता है उसे ही बयान कर रहा हूं।

प्रशिक्षण का माहौल– ये प्रशिक्षण काफी खुशगवार माहौल का निर्माण करते थे। प्रतिभागियों के लिए इसमें भाग लेना एक उत्साह और स्फूर्ति से भर जाने की बात होती। इस दौरान उन्हें एक महत्वपूर्ण व्यक्ति होने के सम्मान के साथ अपनी भूमिका को पहचानने और उसके निर्वाह के कई मौके मिलते। प्रशिक्षण सत्रों के दौरान सम्बन्धित विषय पर उनके अनुभव और विचारों को अभिव्यक्ति देने से उनमें आत्मविश्वास उभरता। (प्रायः शिक्षक जब अपनी बात रखते तो उनके मन की बात उनके इस्तेमाल किये गये शब्दों से ठीक से संप्रेषित नहीं होती तो उनके अभिप्राय को समझकर व्यक्त करना और कहना कि शायद आप ऐसा कह रहे हैं) चूंकि अधिकांश चर्चाएं सीखने की प्रक्रियाओं और बच्चों को समझने तथा प्रारंभिक विषयों के सीखने के बुनियादी कौशलों पर केंद्रित होती और ज्ञान और जानकारियों के बजाय वहीं किन्हीं गतिविधियों के जरिए ही उत्पादित होती थी, अतः उस समय सभी के पास अपने विचार और अनुभव होते थे। इन अभिव्यक्तियों में पूर्वाग्रह, मिथक और धारणाओं का खूब समावेश होता। और यह तर्कों प्रतिप्रश्नों और नए अनुभव के साक्ष्यों से टूटता धीरे-धीरे और नया अर्थ बनाता। उदाहरण के लिए कहानियों के सत्र में प्रतिभागिओ को पांच या छह समूह में अनूठे तरीके से बाँटा जाता। हर समूह में छोटी चित्र कहानियों की चार पांच किताबें दी जाती। समूहों में इन कहानियों को पढ़कर बच्चों के लिए अच्छी कहानी पर विचार विमर्श होता और फिर सामूहिक चर्चा मे तर्क वितर्क होते। शिक्षा और शिक्षाप्रद कहानी का मसला भी आता और फिर बात आती बच्चों को समझने की। किसी कहानी से मिलने वाले स्वाभाविक अर्थ और थोपे हुए अर्थों की। पढ़ना सीखने ओर विचारों को बनाने में कहानियों की भूमिका की। इस तरह यहां किसी विषय विशेष पर एक नई तरह की समझ प्रस्फुटित

और विकसित हो रही होती जो आगे कक्षा में या जीवन में इस्तेमाल करने की लालसा जगाती।

प्रशिक्षण कक्ष के बाहर का माहौल भी सीखने के लिए काफी उर्वर होता था। स्रोत व्यक्तियों को देर रात तक सत्रों की तैयारी करते हुए देखना, साथ ही रहने, खाने, साफ सफाई, कक्ष तैयारी आदि में खुद काम करना। बाहर से आए आगन्तुक साथियों का (यह बात इस कार्यक्रम को समझने और सीखने सिखाने में मदद करने के लिए देश के विभिन्न कॉलेज के विद्यार्थी, शिक्षक तथा अन्य संस्थाओं से आए लोगों के संदर्भ में है) इसमें दोस्ताना व्यवहार, बातचीत तथा कामों में आगे हो कर शामिल होने, हम शिक्षकों के मन में भी आगे आने का और अपना व अपने लिए खुद काम करने का भाव जगाता। प्रशिक्षण में खाना खाने के बाद अपनी थाली खुद साफ करने का नियम था। इस प्रशिक्षण मे किसी दिन शिरकत करने वाले जिलाधिकारी, शिक्षा सचिव भी जब इस नियम का पालन करने में नहीं हिचकते तो हमें केवल अपनी थाली साफ करने का संदेश ही नहीं मिलता बल्कि काम के आधार पर व्यक्ति को छोटा-बड़ा आंकने के नज़रिए में भी फर्क पडता। यह प्रशिक्षण न केवल हमारे शैक्षिक चिन्तन में असर डालता परन्तु साथ ही हमारी जीवन शैली और व्यवहार को बदलता।

प्रशिक्षण का तरीका— प्रशिक्षण के हर दिन और प्रत्येक सत्र की शुरुआत बालगीत, कविता, खेल, लोकगीत, जनवादी गीत, अभिनय आदि से होती। कक्ष में सभी प्रतिभागी फर्श पर बिछी दरी पर गोल घेरे में बैठते। प्रत्येक सत्र की योजना में गतिविधि, बनने वाले समूह और उसमे लगाने वाली सामग्री की तैयारी पहले से स्त्रोत समूह द्वारा की गयी होती। अतः हर सत्र में प्रतिभागियों के कुछ (सात आठ) समूह बनते। ये समूह सामग्री के साथ (कभी वैचारिक सामग्री भी हो सकती है) निर्देश अनुसार गतिविधि और चर्चा करते। अपने समूह के निष्कर्षों और विचारों को लिखते तथा इन आधारों पर सामूहिक चर्चा में भागीदारी करते। कुछ सत्रों में सामग्री जुटाने कक्ष से बाहर भी जाना होता। परिभ्रमण या आसपास से जानकारी जुटाने या समझने वाले सत्रों में भी समूह में काम करने की अनिवार्यता होती। कई सत्र व्यक्तिगत भागीदारी के भी होते जैसे कहानी आगे बढ़ाना, चित्र बनाना, अनुमान एवं मापन, कल्पनाशीलता और अन्य तरह रचनात्मकता को प्रदर्शित करने वाले।

प्रशिक्षकों की भूमिकाएँ– प्रशिक्षक यानी स्त्रोत समूह। इस स्त्रोत समूह में प्राथमिक शिक्षा और बच्चों के सीखने के बारे में समझ रखने वाले कुछ अध्येता तथा इन प्रायोगिक प्राथमिक शालाओं में पढ़ाने वाले कुछ ऐसे शिक्षक होते थे जो पिछले प्रशिक्षणों में अपनी क्रियाशीलता के आधार पर पहचाने गए होते।

इन प्रशिक्षणों के प्रशिक्षण कक्ष में किसी प्रशिक्षक विशेष की कोई विशेष केन्द्रीय भूमिका नही होती थी। किसी गतिविधि की शुरुआत करने के लिए एक या दो स्रोत समूह के व्यक्ति निर्देश देने के साथ स्वयं भी गतिविधियों में भागीदारी करते। गतिविधियों के दौरान स्रोत समूह के सभी व्यक्तियों की भूमिका अहम होती जोकि प्रतिभागिओं के अलग-अलग समूह में बैठकर, उस प्रक्रिया को समझने में उनकी सहायता की ओर स्वयं भी सीखने की होती थी। गतिविधियों से समूह के अन्दर उभरने वाले सवालों या विचारों पर सामूहिक चर्चा होती, जिसे स्रोत समूह का कोई सदस्य अथवा प्रशिक्षु शिक्षक संग्रहित तथा व्यवस्थित करता व प्रस्तुत करता।

कभी कभी स्रोत व्यक्ति द्वारा इस तरह के प्रश्नों, समस्याओं और अनुभवों को भी सामने लाया जाता जिससे जड हो चुकी धारणाओं को फिर से खंगालने की जरूरत महसूस हो। जैसे मिट्टी से खिलौने बनाकर देखना और इसमें लगने वाले कौशल की पहचान करना या कागज मोड़कर या फाड़कर दो भिन्न संख्याओं को निरुपित करना और फिर इन्हें जोड़ कर बनने वाली भिन्न को दोनों हर के लघुतम समापवर्तक के रूप में दिखाना।

इस स्त्रोत समूह की बड़ी भूमिका सत्र की तैयारी और सत्रों के बाद के आपसी फीडबैक सत्र के दौरान होती। तैयारी के दौरान पूरे सत्र संचालन की योजना बनाना, सामग्री जुटाना, सत्र के दौरान आने वाली संभावित जिज्ञासाओं तथा प्रश्नों के बारे में सोचना, संदर्भ साहित्य पढ़ना, सत्र के बारे में अन्य साथियों से सलाह मशविरा करना यह सब काम में शामिल था।

फीडबैक सत्र असल में स्त्रोत समूह का स्व:प्रशिक्षण सत्र होता जो उनकी तैयारी की कमियों को, योजना की व्यवहारिकता तथा उद्देश्य पर सवाल उठाता। ये फीड़ बैक सत्र प्रशिक्षण सत्र के बराबर या कभी कभी उससे भी बड़े होते। दरअसल इस तरह निरन्तर सीखने के उद्यम में अपने को बनाए रखना ही स्त्रोत शिक्षक की भूमिका का प्रमुख हिस्सा होता।

इन प्रशिक्षणों का एक भाग स्त्रोत व्यक्ति का शाला में जाकर शिक्षक के साथ बच्चों के बीच मिलकर सीखना-सिखाना होता। शिक्षक के साथ सहयोग और विश्वास से बना यह रिश्ता बच्चों की अंगुली पकड दूर तक चला।

इस तरह की इन यादों का सफ़र थोडा लम्बा है पर वह सीखने का सफर बहुत छोटा था।